26-12-67 ओम शान्ति रात्रि क्लास

यह ल० ना० का चित्र कीलियर बहुत है। शिव बाबा उपर में है। वो है सब का बाप। बाप से वर्सा मिलता है। बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते है। स्वर्ग में राज्य है ही इन ल० ना० का। 5000 वर्ष पहले भी था। फिर कहा गया। बाप समझाते है 84 पुनर जन्म के लिये। यह ही विष्णु बनते है फिर 84 का चक्र खाये फिर ब्रहमा बनते है। दिखाते भी है ना कि विष्णु की नाभी से ही ब्रहमा निकला। फिर कहेगे कि ब्रहमा की नाभी से विष्णु निकला। ब्रहमा सो विष्णु। देवता बना फिर 84 जन्म लेने है। बाप समझाते है कि तुम 84 जन्मो को नही जानते हो। मैं ही आकर बताता हू। कितना ही सहज है। बाप ब्रहमा दवारा ही कहते है कि मुझ पारलौकिक बाप को याद करो। मैं हा हू पतित पावन। तो तुम्हारी कट योग बल से भसम हो जावेगी। यह है याद की यात्रा। अपने को आत्मा समझो और मास एकस याद करो। तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेगे। फिर तुम ही देह बन जावेगे। तुम अभी हो ब्राहमण। प्रजा पिता ब्रहमा की उलाद। बाप ने समझाया है कि बाप ही आकर आत्माओ को ज्ञान देते है। आत्मा भृकुटी के बीच में रहती है। आत्मा ही अविनाशी है और शरीर विनाशी है। अब तो वापिस जाना है इसलिये बाप कहते है कि अपने को आत्मा समझोऔर बाप को ही याद करते करते तमो प्रधान से सतो प्रधान बन जावेगे। जैसे ही उतरे हो वैसे ही चढ़ते भी हो। आत्मा का योग लगने से बैटरी भर जावेगी। दीवा बुझ गया है सो फिर जले कैसे। गरित चाहिये। दीवा जलाते है तो गरित डालते है। तो यह भी आत्मा पतित बनने से ठंडी हो जाती है। प्रजा पिता है पतित इनको भी इन जैसा ही बनना है। तत त्वम। पहले तो देवता फिर क्षत्रि फिर वैष्य और फिर शूद्र बनते है। तुम देवता हो तो पूज्य भी हो। सतयुग त्रेता में पूजय फिर पुजारी बनते हो। बाप कहते है कि मैं तो ऐवर ही पूज्य हू। तुम ही पूज्य और पुजारी बनते हो ना। अब तुम पूज्य बन रहे हो। इस समय तुम ही बाप से वर्सा ले रहे हो सतयुग का। माया पर भी जीत पाने के लिये बल होना चाहिये। तो आलमाईटी सेे योग लगाने के लिये बल मिलता है। जो अच्छी रीत याद करेगे तो वो ही सतोप्रधान बन जावेगे। अगर थोड़ा योग होगा तो प्रजा में पद पावेगे। पावन तो बनना ही है। दैवी गुण भी धारण करने है। काम महा शत्रु है। कहते भी है ना कि पतितो को पावन बनाओ। अब यह है सहज याद। कोई भी देह धारी को याद ना करना है। अपनी भी देह को याद ना करना है। कलियुग में अनेक ही धर्म है। वो सब धर्म का विनाश हो एक धर्म की स्थापना हो रही है। इनका एक ही राज्य था ना। हेल्थ और वेल्थ दोनो ही मिलती है। इसको ही सतयुग कहा जाता है। यह है ही कलियुग दुख धाम। बाप कहते है कि चलो सुख धाम में। तुम्हारी ही हिस्ट्र और जाग्रफी रिपीट होनी है। जब पुजारी है तो पूजय कोई भी होते ही नही है। शंकरा चार्य भी तो शिव की ही पूजा करता है ना। तो इनको पूजय कह ना सकेगे। तुम इनको लिख सकते हो। तुम पुजारी हो और अपने को पूज्य कह नही सकते हो। पूज्य देवी देवता होते ही सतयुग में। अब तुम हो पुजारी। रूहानी बाप ही समझाते है। सुनता है। आत्मा हो मुख्य अविनाशी है। बाप समझाते है कि आत्मा एक ही है। मैं हूं शिव। मेरा शरीर नही है। यह भागीरथ है जिसमें मैं प्रवेश करता हूं। मुझे बुलाते ही है कि आकर पावन बनाओ। बाप कहते है कि मैं तो आता ही हूं पतित शरीर में पावन बनाने के लिये। अब तुम ब्रहमण हो ना। तुम्हारा हीरो हिरोयन का पार्ट है। जो हार खाते हो फिर जीत भी पहनते हो ना। अब जीत पहन रहे हो। दवापुर के बाद फिर हार खावेगे। इस समय बाप आते ही है पतितो को पावन बनाने के लिये। यह ज्ञान भी तुम बच्चो को ही मिलता है। तुम ही राज ऋषि भी हो। राज के लिये ही तपस्या कर रहे हो ना। वो तो है हठ योग राजयोग सिखला नही सकते। वो तो है ही निवृति मार्ग के। तुम प्रवृति मार्ग मे थे। फिर पतित बने हो। अब फिर पावन बनना है। यह कितना हा सहज ज्ञान है। अपने को आत्मा समझ कर बेहद के बाप को याद करना है। उनको हेवनली गाड फादरली कहते है ना। कोई भी मनुष्य नही है जो रचता और रचना को जानते हो। जाने भी तब ही जब कि बाप भी अपना परिचय देवे। बाप यह शरीर लोन लेते है। 84 का चक्र सिर्फ तुम ही खाते हो। सबसे जास्ती जन्म भी तुम्हारे होते है।

क्रिश्चियनस के थोड़े जन्म होगे ना। इनके तो है ही 2000वर्ष। यह नालेज है ना। ऐम आवजेक्ट है ही नर से नारायण बनने की कथा। हर 5000वर्ष के बाद तुम बाप से ही सुनते हो ना। तुम सब इस समय अमर कथा सुन रही हो ना। अमर कथा शिव बाबा ही सुनाते है। सत्य नारायण की कथा भी बाप ही सुनाते है। कहा भी जाता है ना कि सुप्रीम बाप सुप्रीम टीचर सुप्रीम सतगुरु। देवी देवताओं का धर्म ही ऊंच ते ऊंच है। मुख्य तो है ही पवित्रता। इस पर ही अबलाओं पर अत्याचार होते है। बाप कहते है कि यह अन्तिम जन्म ही नगन नही होना है। भक्ति तो है दुर्गति मार्ग। सदगति होती है ज्ञान से। ज्ञान है सदगति मार्ग और भक्ति है ही दुर्गति दुर्गति मार्ग। अब हम तो जावेंगे ही अपने घर। बाकी तो सब ही खत्म हो जावेंगे। तुम्हारा है ही योग बल। जैसे तुम विश्व के मालिक बनते हो। आसुरी बल से ही विनाश होता है। तुम ही डबल अहिंसक बनते हो अब तुम बच्चो को शान्ति धाम और सुख धाम को याद करना है ना। बाकी और सब कुछ ही भूल जाना है। पढ़ाई बहुत सहज है ना। सैकन्ड में ही जीवन मुक्ति होती है। बाप के बने तो समझो कि वर्से के भी हक दार बने। परन्तु नम्बरवार पद तो बहुत है ना। बाप कहते है कि अब तुमको वापिस जाना है। देह का अहंकार भी छोड़ना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। कट उतरे तो फिर कशिश भी होवे ना। कट उतरे तो तब ही कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। तो फिर पास अवस्था ही आनर होगी। नही तो फेल हो जावेंगे तो चन्द्र वंशी में जाना पड़ेगा। उनको क्षत्री धर्म कहा जाता है ना। थोड़ा भी ज्ञान सुना हुआ है तो तो स्वर्ग में जरूर आवेंगे। फिर पढ़ाई में लग जावें तो पास भी हो सकते है। पिछाड़ी वाले पहलो से ऊंच पद पा रहे है। रात दिन मेहनत करे तो बहुत ही आगे जा सकते है। बाप की श्री मत पर चलने से ही श्रेष्ठ बन सकते है ना। अच्छा मीठे मीठे सिकिलधे रूहानी बच्चो प्रति रूहानी बाप वा दादा का दिल जान सिक वा प्रेम से याद प्यार और गुड नाईट। मीठे मीठे बच्चो को रूहानी बाप को अर्थ सहित नमस्ते।

GOD FATHERLY GREETINGS ON AUSPICIOUS OCCASION OF OPENING WORLD RENEWAL SPIRITUAL MUSEUM FOR GUIDING HUMANITY TO OBTAIN GOD FATHERLY BIRTHRIGHT OF 100 % PURITY PEACE AND PROSPERITY FOR 21 SUCCESSIVE BIRTHS IN THE ENSUING SATYUGI SURYAVANSHI DEITY WORLD SOVEREIGNTY WHICH IS BEING RE-ESTABLISHED BY THE MOST BELOVED HEAVENLY GOD FATHER SHIVA, THE OCEAN OF KNOWLEDGE AND BLISS, PATITPAWAN AND LIBERATOR AT THIS AUSPICIOUS PURSHOTAM CONFLUENCE YUGA BY TEACHING MANKIND THROUGH PRAJAPITA BRAHMA AND HIS PROGENY THE EASIEST RAJYOGA I.E. COMMUNION WITH INCORPOREAL WORLD GOD FATHER SHIVA ACCORDING TO PRE-ORDAINED WORLD DRAMA PLAN LIKE 5000 YEARS AGO BEFORE THE FORTHCOMING WORLD DESTRUCTION OF MAHABHARAT FAME WITHING EIGHT YEARS.

--- RAPDADA ---